"अंधकार को क्यों धिक्कारें।
अच्छा है एक दीप जलाए।।"

महिला शक्ति बोध

2019

Women Empowerment Cognition

श्री शक्ति डिग्री कालेज

साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर

Shri Shakti Degree College

Sankhahari, Ghatampur, Kanpur Nagar

Website : www.ssdckanpur.org

E-mail : info.ssdc@gmail.com

क्रमणिका

		पेज नं0
1.	महिला शक्तिबोध पत्रिका	1
2.	संपादकीय (डॉ0 संध्या सचान)	2–3
3.	शुभकामंना संदेश	4–6
4.	चित्रवीथिका	7–9
5.	ग्रामांचल कोना (गृहणी विचार)	10–12
6.	Women Empowerment (Deepti Sachan)	13–14
7.	हालात कहाँ बदले है (स्वीटी पाण्डेय प्रवक्ता–डी0एल0एड0)	15–16
8.	आर्ट एण्ड क्राफ्ट (श्रीमती ज्योत्सना अवस्थी)	17
9.	सशक्तिकरण के मायने (अंकिता, बी0ए0 प्रथम वर्ष)	18
10.	स्त्री नारी महिला (मन्जू देवी, बी0ए0 द्वितीय वर्ष)	19
11.	महिलाओं के प्रति बदलता दृष्टिकोण कितना सच–कितना झूठ (लक्ष्मी, बी0ए0 प्रथम वर्ष)	20–21
12.	नारी एक सफर है (कोमल बी0ए0 प्रथम वर्ष)	22
13.	स्त्री एक सफर (पूजा देवी, बी0ए0 प्रथम वर्ष)	23
14.	मै स्त्री जिंदगी (हर्षिता देवी, बी0ए0 द्वितीय वर्ष)	24
15.	स्त्री एक सफर (नीतू, बी0ए0 प्रथम वर्ष)	25
16.	नारी सशक्तिकरण (खुशी, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष)	26–27
17.	महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है (रिचा त्रिवेदी, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष)	28–29
18.	महिला सशक्तिकरण (मधु त्रिवेदी, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष)	30–31
19.	महिला सशक्तिकरण (प्रियांशी देवी, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष)	32
20.	नारी सशक्तिकरण (रिचा मिश्रा, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष)	33
21.	महिलाओं के प्रति बदलता दृष्टिकोण कितना सच–कितना झूठ (प्रिया शुक्ला, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर)	34
22.	महिला सशक्तिकरण (शिवा देवी, डी0एल0एड0 प्रथम वर्ष)	35
23.	बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं (विकास कुमार, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर)	36
24.	महिला सशक्तिकरण के मायने (नीलम देवी, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर)	37–38
25.	महिलाओं के प्रति बदलता दृष्टिकोण कितना सच–कितना झूठ (कीर्ति, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर)	39–40

क्रमणिका

पेज नं0

26. महिला सशक्तिकरण (वन्दना देवी, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 41
27. बालिका भ्रूण हत्या (प्रतिभा सिंह, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 42
28. महिला सशक्तिकरण (सृष्टि सक्सेना, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 43–44
29. हमें मालूम है हमारी हत्या का सबब (सुमति वर्मा, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 45
30. महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण कितना सच–कितना झूठ (हर्ष वर्मा, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 46–48
31. सशक्तिकरण (किरन वर्मा, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 49
32. महिला सशक्तिकरण (मेनका देवी, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 50
33. नारी सशक्तिकरण के मायने (मेघा मिश्रा, डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर) 51
34. भारतीय नारी पर निबन्ध (अंजली सिंह, बी0एड0 प्रथम वर्ष) 52
35. नारी शिक्षा (रोहित कुमार, बी0एड0 प्रथम वर्ष) 53
36. महिला सशक्तिकरण (पूजा तिवारी, बी0एड0 प्रथम वर्ष) 54
37. महिला सशक्तिकरण (अजय कुमार, बी0एड0 द्वितीय वर्ष) 55–56

''महिला शक्तिबोध पत्रिका''

महाविद्यालय पत्रिका

2018—19

संरक्षक / परामर्श :– श्री रमेश चन्द्र त्रिवेदी (संस्थापक)

संस्करण :– तृतीय

संपादक : डॉ0 संध्या सचान (असि.प्रो0)

सह संपादकः– ज्योत्सना अवस्थी

शिक्षिका **सहयोगी :–** दीप्ती सचान, स्वीटी पाण्डेय

ग्रामांचल कोना :– श्रीमती मीरा देवी हरबसपुर एवं संगीता देवी, सवाईपुर

प्रकाशक :– ऐन्द्री समिति, श्री शक्ति डिग्री कालेज

साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर–209206

प्रकाशन वर्षः– 2018—19

छात्रा सहयोगीः– कंचन, प्रिया, उजाला

संपादकीय

महिला सशक्तिकरण क्या है ? हमेशा इस प्रश्न पर पुरूष समाज का एक उत्तर मिलता है कि महिलाओं का आजाद होना! आजाद होने का तात्पर्य पुरूष दृष्टि से महिलाओं के निरूद्देश्य घूमने –फिरने से होता है, मनमानी करने से होता है। पुरुष समाज यही नही रूकता वह फिर पत्थर उछालता है बड़े व्यंग्य से घृणा के साथ बिना लगाम के रहना चाहती है, सड़कों पर घूमना चाहती हैं यही आजादी है इनकी। पुरुष समाज द्वारा उछाले गये ये वे पत्थर है जिनकी चोट महिलाओं को सहमने और ठिठकने के लिये मजबूर कर देती है। यही तो चाहता है पुरुष समाज कि स्त्री डरे, सहमें यदि वो डरेगी नही तो शासन किस पर किया जाएगा ? अपनी जरूरतों को जिद के साथ कैसे मनवाया जाएगा ? पर कितना अदभुत है धीमे–धीमे ही सही परिदृश्य बदल रहा है। ध्यान से देखें तो हर कालखण्ड में अलग अद्‌भुत करने की क्षमता महिलाओं में रही है। फिर चाहे वे सीता, सावित्री, अहिल्या, दुर्गावती, इन्दिरागांधी, कल्पना चावला ही क्यों न हो। किन्तु आवश्यकता है कि महिलाएं कैसे देखती हैं। उनमें कितना परिवर्तन है। आज आवश्यकता है आम महिलाओं में परिवर्तन लाने की उन्हें और उनके व्यक्तित्व को अस्तित्व देने की। जब उनके विचारों में, उनके जीवन में, उनकी स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन होगा तभी वास्तविक महिला सशक्तिकरण होगा। कुछ गलत लोगों के कारण समाज में महिलाओं की स्थिति दयनीय हो जाती है। उनका स्कूल, कालेज, नौकरी, कैरियर सब बर्बाद हो जाता है। उनके बाहर निकलने के दरवाजें बन्द हो जाते हैं। तब जरूरत होती है दरवाजें न सही खिड़कियां ही खुले कुछ तो रोशनी मिले इसी रोशनी की कड़ी का नाम हैं, आत्मनिर्भरता। आत्म निर्भरता ऐसे ही नही आती उसके

लिये आवश्यक है आर्थिक आत्मनिर्भरता का होना।

महिलाओं में आर्थिक निर्भरता न होने का प्रमुख कारण है कि उन्हें होश संभालते ही खाना बनाना, कपड़े धोना, घर संभालना तो सिखाया जाता है किंतु आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना नही सिखाया जाता है। यह विडम्बना ही है कि लड़कियों को कमाना जरूरी नही है। बचपन से ही दवा की तरह खिलाते रहते हैं जिसका प्रभाव यह होता है कि वे सिर्फ घर के कार्यों में उलझकर रह जाती है।

कहा जाता है महिलाओं को कमाने की क्या जरूरत है ? बेटियों की कमाई थोड़े ही खानी है ? ये वे प्रश्न है जिन्हे पुरुष समाज अपना दम दिखाने के लिये करता है किंतु क्या ये जरूरी है कि बेटी का विवाह जिसके साथ हो रहा है वह उसका और परिवार का खर्च उठाने में सक्षम ही हो! हो सकता है कोई दुर्घटना हो जाए या फिर उसकी आय से परिवार का खर्च पूरा न हो तक ? क्या यह सोचकर भी बेटियों को शिक्षित नही किया जा सकता ? क्या ये जरूरी नही है कि बेटियों को शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण दिलाया जाये। उसे उसके हुनर से परिचित कराया जाए। पार्लर, बुटीक, सिलाई, बुनाई, गृह सज्जा ऐसे वे काम है जिन्हें वे बड़ी आसानी से कर सकती है। महिला सशक्तिकरण एक सोच है नवीन दृष्टी है और जरूरत है इसे समझने और सहयोग करने की।

डॉ. संध्या सचान

डॉ0 संध्या सचान
(हिंदी विभाग)
श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

''महिला शक्तिबोध'' के तृतीय अंक का प्रकाशन महिला सशक्तिकरण एवं जागृति का जीवन्त प्रतीक है। गत अंक में मेरे द्वारा दिये गये परामर्श का पूर्ण रूचि एवं क्षमता के साथ क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। साथ ही कम से कम तीन ग्रामीण महिलाओं के लिखित विचारों को ''लेख के रूप में'' लेकर प्रकाशित करने से ग्रामीण महिलायें प्रोत्साहित होंगी। मेरे इस परामर्श पर ऐन्द्री समिति द्वारा विचार करके निर्णय लेने की आवश्यकता है।

इस अंक के प्रकाशन के लिये मैं सम्पादक डॉ0 संध्या सचान तथा ऐन्द्री समिति के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाईयाँ देता हूँ तथा भविष्य की सफलता के लिये शुभकामनायें भी देता हूँ।

रमेश चन्द्र त्रिवेदी
(संस्थापक)
श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि श्री शक्ति डिग्री कालेज साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर अपनी वार्षिक पत्रिका 'महिला शक्ति बोध' का द्वितीय पुष्प प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ग्रामीण महिलाओं को प्रोत्साहित करने वाले कार्यों को पर्याप्त स्थान दिया जायेगा। जिससे महिला सशक्त हो सकें और अपना सर्वागींण विकास कर सकें । मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'महिला शक्ति बोध' के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

विनय त्रिवेदी
(प्रबन्धक)
श्री शक्ति डिग्री कालेज

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्री शक्ति डिग्री कालेज साँखाहरी, घाटमपुर, कानपुर नगर 'महिला शक्ति बोध' नामक पत्रिका का वार्षिकांक प्रकाशित कर रहा है। इस प्रकाशन से महिलाओं की प्रतिभा को रचनात्मक दिशा देने का अवसर प्राप्त होगा। महिलाओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि महाविद्यालय से पत्रिका का प्रकाशन अनवरत प्रति वर्ष होता रहे। पत्रिका में प्रकाशित लेख निसन्देह प्रेरणादायक है तथा ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को आर्थिक निर्भरता हेतु की गयी कार्यशाला प्रशसंनीय है । महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन हेतु पत्रिका अपना योगदान कर सकेगी। इसी कामना के साथ।

Trivedi

ले० विवेक त्रिवेदी

(उपप्रबन्धक)

श्री शक्ति डिग्री कालेज

चित्रवीथिका

ग्राम रवाईपुर स्वच्छता अभियान रैली के साथ एन्द्री समिति की सदस्या ज्योत्सना अवस्थी।

निबिया खेड़ा में छात्र/छात्राओं के साथ स्वच्छता संदेश को प्रसारित करने का निर्देश देते हुए डॉ0 संध्या सचान

ग्राम सांखाहरी में महिला कौशल विकास के लिये कार्यशाला को देखते हुय एन्द्री समिति की सदस्या।

मेंहदी लगाना सिखाते हुए ग्राम सांखाहरी में एन्द्री समिति की सदस्या ज्योत्सना अवस्थी।

महिला जागरूकता एवं स्वरोजगार कार्यक्रम में साथी शिक्षिकाओं के साथ एन्द्री समिति

मेंहदी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्र/छात्रायें।

चित्रवीथिका

ग्राम हरबसपुर में महिला स्वरोजगार कार्यशाला में एन्द्र समिति एवं ग्रामीण महिलायें।

एन्द्री समिति के साथ मतदाता जागरूकता अभियान में छात्राएं।

ग्राम हरबसपुर में स्वच्छता अभियान के साथ एन्द्री समिति।

महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं रैली में एन्द्री समिति

प्राथमिक विद्यालय ग्राम सांखाहरी में प्लास्टिक उन्मूलन कार्यक्रम में छात्र/छात्राएं।

ग्राम सांखाहरी में जल संरक्षण के बारे में बताते हुए

चित्रवीथिका

ग्राम सांखाहरी में स्वच्छता के बारे में बताते हुए छात्रायें एवं एन्द्री समिति की सदस्या।

प्राथमिक विद्यालय में सफाई अभियान करती छात्रायें।

हरबसपुर में रोजगार से संबंधित हस्त निर्मित वस्तुओं को बनाने की कार्यशाला का आयोजन

महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं रैली में ग्रामीण महिला को जागरूक करते हुए छात्रायें

''श्री शक्ति डिग्री कालेज'' में रंगोली बनाती छात्रा।

युवा महोत्सव में पुरस्कार प्राप्त करती छात्रा। साथ में डॉ0 संध्या सचान

महिला सशक्तिकरण

प्रियंका सोनी
गृहणी, ग्राम–हरबसपुर

महिला सशक्तिकरण जानने से पहले– हमें यह समझ लेना चाहिये कि हम सशक्तिकरण से क्या समझते हैं। सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसमें यह योग्यता आ जाती है जिसमें वह अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं ले सके।

महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहाँ महिलाएँ परिवार व समाज के सभी बन्धनों से मुक्त होकर अपने प्रस्तावों की निर्माता की तरह हो सकती है।

महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को असली स्थान नही मिल सकता जिसकी वह हमेशा से हकदार रही है। महिला अधिकारों और समानता पाने में महिला सशक्तिकरण ही अहम भूमिका निभा सकती है क्योंकि महिला सशक्तिकरण महिलाओं को सिर्फ गुजारे भत्ते के लिये ही तैयार नही करती बल्कि उन्हें अपने अन्दर नारी चेतना को जगाने और सामाजिक चेतना को जगाने का सुवसर प्रदान करती है। दूसरों शब्दों में कहे तो नारी घर की लक्ष्मी है, यानि धन एवं आशीषों की वर्षा, इतिहास गवाह है कि नारी ने हमेशा से परिवार संचालन का उत्तरदायित्व सम्भालते हुये। समाज निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारे ग्रन्थों में नारी को गुरुतर मानते हुये यहाँ तक घोषित किया गया है।

''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता''

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं, पं० जवाहर लाल नेहरू द्वारा कहा गया प्रसिद्ध वाक्य लोगों को जगाने के लिये महिलाओं का जाग्रत होना आवश्यक है । एक बार जब वह अपना कदम उठा लेती है तो परिवार आगे बढ़ता है और गांव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उनयुक्त होता है।

मेरे विचार

सुमित्रा देवी
गृहणी, ग्राम–नौरंगा, घाटमपुर

हमारे गांव में स्कूली बिटिया और दीदी आकर महिलाओं के लिये तमाम बाते बताती है। साफ-सफाई, खाना और अच्छा खाना के अन्तर बताती हैं तो अच्छा लगता है सिलाई, कढ़ाई सिखाती है। अब मैं भी सिलना सीख गई हूँ और दूसरों के भी कपड़े सिल लेती हूँ। मैं चाहती हूँ कि ये हमेशा गांव आये और नई बाते बतायें। इससे पता चलता है कि हमें भी आर्थिक रूप से और शरीर से मतबूत रहना चाहिए।

मेरी नजर में महिला सशक्तिकरण क्या है ?

नीलम शुक्ला
गृहणी, ग्राम– जमालपुर

महिलाओं की इच्छा, उनकी महत्वाकांक्षाओं का आदर करना ही मेरे लिये महिला सशक्तिकरण है। हर औरत का विजन या सपना अलग है। हर औरत का सी०ई०ओ० नही बनना चाहती। हर औरत मांउट एवरेस्ट पर नही चढ़ना चाहती। हर एक के सपने अलग है और उन सपनों का आदर बहुत जरूरी है। परिस्थितियाँ ऐसी हों कि महिलाओं को अपने सपने पूरे करने के अवसर मिलें। सशक्तिकरण का मतलब शिक्षा है। जब तक एक लड़की को शिक्षा नही मिलेगी तब तक उसका सपना भी बड़ा नही हो सकेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों में पढ़ाई का जोश है, लेकिन सुविधाएं नही होने के कारण आठवीं कक्षा के बाद स्कूल से ड्रॉपआउट हो जाती है। उनका सपना छोटी उम्र में ही खत्म हो जाता है और उनकी शादी हो जाती है। ऐसे में समाज और सरकार के साथ-साथ हमारी यह जिम्मेदारी है कि उन्हें अवसर मिले, एक्सपोजर मिले। वे अपने सामने ऐसे उदाहरण देखें कि कह सकें, 'अगर वह कर सकती है, तो मैं भी सकती हूँ...।

- : Women Empowerment : -

Key to Social and Economic Growth

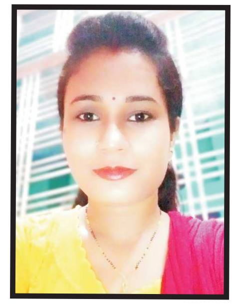

दीप्ती सचान

प्रवक्ता–बी0सी0ए0 डिपार्टमेन्ट

Women empowerment can be defined as a process leading to enhancing women's control over financial, human and intellectual resources in society. In any nation, the women empowerment can be measured by extent of their involvement in social, economic and political fields. Women can be made said to be truly empowered only when all the factors such as self-worth of women, their right to control their own lives, their ability to bring about social change, are addressed simultaneously.

Participation of women in politics through reservation is undoubtedly a positive development of recent times. Still, only the election should not be the end, but the active participation of women in decision making process and in planning and implementation of development programmes is also required.

Women's lives must converge effectively and all the efforts in this direction should be focused towards the goal to bring about a social change leading to manifestation of balance between male and female forces in the society.

Though women comprise almost half of the total percentages of world's population, they are still deprived of their rights in most of the developing countries across the globe. Particularly in the South and East Asian nations apart from the African countries, the women are leading deprived lives, due to prevalent gender discrimination.

Situation of women in rural areas is more miserable than their counterparts living in urban spaces. It has been widely prevalent that the women are mostly deprived of an equal status vis-a-vis men and thus they remain as passive beneficiaries in the societies in these countries. They remain powerless, due to their less participation and involvement in the generation of resources critical for development. Therefore, women must become active partners with men, if the goal of women empowerment is desired to be achieved in totality.

For this to happen, it is required to empower women on all fronts: social, economic, political as well as religious — in such a manner that they can participate actively in all the efforts meant to provide growth to the society. If empowered with equal opportunities in different spheres of life such as social, economic and political, the women will have the choice to lead a publicly active life which may also bring about a positive change in the society. We need to create conducive environment in the society so that the women become confident enough to be able to articulate their thoughts and become more productive in their actions. They are required to be given equal opportunities to be involved in taking decisions for their family as well as society and the country altogether.

हालात कहाँ बदले हैं

स्वीटी पाण्डेय
प्रवक्ता–डी0एल0एड0

भारतीय समाज शुरू से ही पुरूष प्रधान है यहाँ महिलाओं को हमेशा से दूसरे दर्जे का माना जाता है। पहले महिलाओं के पास अपने मन से कुछ करने की सख्त मनाही थी। लेकिन अब महिला उत्थान को महत्व का विषय मानते हुए कई प्रयास किए जा रहे हैं और पिछले कुछ वर्षो में महिला सशक्तिकरण के कार्यों में तेजी भी आई है।

लेकिन सोचने वाली बात है क्या वास्तव में महिला सशक्त हुई है ? क्या उसके हालातों में बदलाव आया है? ऑफिस में काम करती हुई महिला मेट्रो में सफल करती हुई महिला लगभग हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हुई महिला को देखकर लगता है कि सच में महिला बहुत सशक्त हो गई है उसके हालातों में बदलाव आया है। लेकिन यह सिक्के का सिर्फ एक पहलू है जो बहुत उजला और चमकदार लगता है, जब हम सिक्के के दूसरे पहलू पर नजर डालते है तो बहुत ही स्याह पक्ष निकल कर आता है। एक औरत को घर से लेकर ऑफिस तक हर जगह बहुत संघर्ष करना होता है। तरह-तरह की बाते सुननी पड़ती है जो आत्म सम्मान को झकझोर कर रख देती है फिर भी हालातों को देखते हुए चुपचाप सब सहना पड़ता है। अधिकतर पुरुष तो कहते हैं कि जिस क्षेत्र में स्त्री ने कदम रखा वह क्षेत्र ही चौपट ही गया, स्त्रियों का काम सिर्फ घर संभालना और बच्चों को पालना है, स्त्रियों को घर से बाहर नही निकलना चाहिए, उनकी ऐसी दकियानूसी बाते सुनकर हँसी भी आती है और गुस्सा भी। २१ वीं सदी में जी रहे, टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हर क्षेत्र में, लेकिन स्त्री उन्हें 18 वीं सदी की ही चाहिए, खुद चाहे जैसे हो। आज भी पुरुष सशक्त स्त्री को स्वीकार नही कर पर रहा, क्योंकि शायद कहीं न कहीं उनके मिथ्या अभिमान को ठेस पहुँचती है। पुरुष अपने पुरुषत्त को कायम रखने के लिये महिलाओं को हमेशा अपने से कम होने का अहसास दिलाता आया है। वह हमेशा महिला को सेविका के रूप में ही देखना तथा खुद उन पर शासन करना पंसद करता है।

समय बदल जाने के बाद भी पुरुष आज भी महिलाओं को बराबरी का दर्जा देना पंसद नही करते उसकी मानसिकता आज भी पहले जैसी है। एक बहन और बेटी के रूप में तो महिला की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है लेकिन पत्नी के रूप में आज भी उसकी स्थिति बदतर है। पुरुषा को विवाह के बाद ऐसा लगता है जैसे पत्नी उनकी निजी सम्पत्ति हो वो उसे एक इंसान रूप में न देखकर सम्पत्ति के रूप में देखता है जिसकी इच्छाओं पर, सपनो पर, उसकी हर सॉस पर, सिर्फ उसी का शासन होगा। कभी कभी तो ऐसा

लगता है कि विवाह के बाद अधिकारिक तौर पर उन्हें अपनी पत्नी से मारपीट करने का लाइसेंस मिल गया हो।

लेकिन सोचने वाली बात है कि स्त्रियों के साथ इसत के गलत व्यवहार का जिम्मेदार कौन है? क्या यह पुरुष समाज या स्त्री खुद। मेरी में तो 100 प्रतिशत स्त्री की गलती है और वो खुद इसके लिये जिम्मेदार है, क्योंकि वह कभी गलत बातों का विरोध नही करती, बस उसे अपनी नियत मान कर आँसुओं को पीते हुए चुप रहकर सब सहती है।

लेकिन बस, अब बहुत हो गया अब स्त्री की अपने साथ होने वाले हर गलत व्यवहार का मुँहतोड़ जवाब देना होगा। अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा। इतिहास गवाह है अधिकार कभी भी माँगने से नही मिलता उसके छीनना पड़ता है, उसके लिये लड़ना पड़ता है। सम्पूर्ण स्त्री वर्ग से मेरा आग्रह है कि अपने कर्तव्यों के प्रति किसी भी प्रकार का समझौता न करते हुए अपने अधिकारों के लिये लड़ों। लेकिन यह याद रहे अधिकार के साथ जिम्मेदारियाँ भी निभानी होती है अतः अधिकार और कर्तव्य के बीच समुचित तालमेल बैठाते हुए प्रगति पथ की ओर अग्रसर हो।

जागो औरत जागो

औरत तुमझको अब सिर उठाकर जीना होगा,
अपनी सोई हुई आत्मा को जगाना होगा,
अब तुझको तोड़नी होगी समाज की बनाई ये वर्जनाएँ,
और एक नए सफर के लिये निकलना होगा,
पुरुषों के द्वारा खींची लक्ष्मण रेखा को,
अब तुझको लांघना ही होगा,
बहुत सह लिया तूने अत्याचार,
अब तुझको चण्डी का रूप रखना ही होगा,
बहुत जी लिया तून गैरों की रहमत पर,
अब अपने अधिकारों के लिये तुझे लड़ना ही होगा,

जागो औरत जागो
खुद के अन्दर छुपी हुई शक्ति को पहचानो,
अगत तू प्यार का दरिया है,
तो दुष्टों के लिये,
तुझे विनाश का बंवडर बनना ही होगा,
औरत तुझको अब सिर उठाकर जीना हो होगा

आर्ट एण्ड क्राफ्ट

श्रीमती ज्योत्सना अवस्थी
विभाग–आर्ट एण्ड क्राफ्ट

आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट क्या है ?

हमारे कालेज में आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट रिसोर्सिस सेन्टर है। जहाँ हम अपने विद्यालय के छात्र/छात्राओं की नयी तकनीक के द्वारा पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए बेकार चीजों को रिसाइकलिंग करना तथा हस्तशिल्प और आर्ट की शिक्षा देते हैं।

आवश्यकता :– वर्तमान युग तकनीकी विकास का योग है पिछले पच्चीस वर्षों में तकनीकी विकास बहुत तेजी गति से हुआ है। रहन–सहन के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन हुए है ऐसी स्थिति में देश के प्रत्येक भाग में व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता में वृद्धि हुई है। व्यवसायिक शिक्षा के अन्तर्गत सरकार ने अनेक पाठयक्रम शुरू किए हैं जिससे प्रशिक्षित होकर व्यक्ति आसानी से सरकारी अर्धसरकारी अथवा स्वः रोजगार भी प्राप्त कर सकता है।

उपलब्ध व्यवसायिक ट्रेड :–

1- फैशन डिजाइनिंग	2- इन्टीरियर डेकोरेशन	3- मेंहदी व्यूटीकल्चर एण्ड हेल्थकेयर
4- कैन्डिल, अगरवत्ती की पैकिंग	5-टाय एण्ड डाई पेन्टिग	6-न्यूज पेपर

इसके अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छता, कुपोषण, पर्यावरण, प्रदूषण, बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं, तथा ग्रामीण महिलाओं को सिलाई कढ़ाई, बुनाई इत्यादि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

आर्ट एण्ड क्राफ्ट के अन्तर्गत छात्राओं को नाट्य मंचन का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसका उद्देश्य समाज को जागरूक करना तथा आत्मविश्वास जगाना है।

मेरे विचार में :– सभी व्यक्ति असीम सामर्थ्य लेकर इस भूमण्डल पर आते हैं। हमें परमात्मा ने उतनी ही शक्तियां दी हैं जितनी किसी अन्य व्यक्ति को जिन समस्याओं, को दूसरे पार कर जाते हैं हम क्यों नहीं? प्रश्न केवल आत्मविश्वास, भरोसा, एवं दृढ़ निश्चय के साथ उसके सदुपयोग का है। जिससे कि कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी पार किया जा सकता है। निराश न हो चाहे जीवन कष्टों से परिपूर्ण क्यों न हो, क्योंकि काली अंधेरी रात के बाद ही मुस्कुराती सुबह होती है।

थॉमस एडीशन के शब्दों में :–''हमारे सबसे बड़ी कमजोरी हार मान लेना है। सफल होने का सबसे निश्चित तरीका है हमेशा एक और प्रयास करना।''

सशक्तीकरण के मायने

अंकिता
बी0ए0 प्रथम वर्ष

आज कल हम नारी के सशक्तिकरण पर अत्यधिक जागरूक हो चुके हैं। सही तरीके से देखा जाये तो महिला सशक्तिकरण का अर्थ ही है महिला को सम्मान देना। उसे आत्म निर्भर बनाना अपने सोंच को आगे बढ़ाना महिला जो कुछ भी करना चाहे जो कुछ भी हासिल करना चाहे कर सके सरकार महिलाओं को अधिकार तो दे देती है पर जब तक वे अपनी सोच भावना में परिवर्तन नही लायेगी तब तक उसका घर से जाना आसान नही होगा। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को आगे बढ़ाने और स्वयं के निर्णय लेने के लिये बहुत बड़ा कदम है। जिससे कि वे समाज में व्यक्तिगत सीमाओं को दूरकर आगे बढ़ सके और अपने विचारों को लोगों के सामने रख सके। इसके लिये नारियों की स्थिति प्रतिष्ठित एवं सम्मानित है। नारी सशक्तिकरण के मायने वे हैं जो उसके मन में कोई आगे बढ़ने की सोंच हो। वह उसे किसी से भी सलाह कर सकती है। उसके आगे बढ़ने में किसी की सलाह लेने की जरूर नही होती है। वह अपनी ऊँची से ऊँची सोंच को पूर्ण करने में सफल हो उसमें कोई बाधा न हो और वह अपने विचार को आगे बढ़ा सके।

स्त्री नारी महिला

मन्जू देवी
बी०ए० द्वितीय वर्ष

पुराने समय में स्त्री देवी की भाँति पूजी जाती रही है लेकिन इस समय में स्त्री ने अपनी एक अलग पहचान बनायी है स्त्रियों का जीवन एक गुजरते सफर की तरह है स्त्री को चाहे जिस नाम से पुकारो पर नारी एक ही है पुरुष की सबसे अच्छी दोस्त नारी ही है इसलिये कहते हैं कि लड़की चाहे जिस किरदार में हो वह माँ, बहन, पत्नी, बेटी या बहू के रूप में । और कहते हैं कि पुरुष की सफलता में किसी न किसी औरत का हाथ जरूर होता है बिना स्त्री के जीवन बेकार है स्त्री का जीवन चुनौतियों से भरा होता है क्यों स्त्री के जीवन में कोई सुख दुःख हो उनको सामना करना पड़ता है स्त्री एक सफर चुनौतियों से भरा है पर आज की नारी अपने साहस तथा आत्मविश्वास के साथ एक जटिल सफर का भी सामना करने को तैयार खड़ी रहती है और वह जीवन में सफल भी है।

महिलाओं के प्रति बदलता दृष्टिकोण
कितना सच-कितना झूठ

लक्ष्मी
बी0ए0 प्रथम वर्ष

सही अर्थों में देखा जाये तो महिला सशक्तिकरण का अर्थ यह है कि महिला को सम्मान देना चाहिए क्योंकि उसके अस्तित्व की रक्षा करना यही महिला सशक्तिकरण की पहचान है जिससे व्यक्ति को अपनी सोंच में या अपने आप में परिवर्तन लाना चाहिए जब समाज में सामाजिक पारिवारिक और वैचारिक बदलाव आयेगा तभी महिलाओं की समस्यायें कुछ कम हो पायेगी आज अगर समाज में जरूरत है तो महिलाओं को सम्मान समझने की उनको सम्मान की दृष्टि से देखने की। जिसमें महिलाओं के प्रति विरूद्ध अपराध जिसमें गलत भाषा का प्रयोग करते हैं आज भी गाँवो में लागू हैं कि बेटियाँ घर में सारा दिन काम करती रहे और कहीं जाने की बात आती है तो जाने नही दिया जाता है समाज में महिला का उतना अधिकार होना चाहिए जितना की पुरूषों का होता है लेकिन महिला का अधिकार तो होता है पर वह समाज से जुड़ी होती है तो अपने मन की बात किसी से कह नही पाती वर्तमान समय में देखा जाये तो महिला सशक्तिकरण में समाजिक सरकारों से दूर होना नही चाहिए।

१. **<u>महिला सशक्तिकरण का बोध</u>** :- महिला सशक्तिकरण में जिसमें कई बार महिला न चाहते हुए भी कुछ ऐसे कार्य करने के लिये विवश हो जाती है और महिलाओं को कुछ ऐसे कार्य होते हैं और जिनमें महिलाओ को झूठ बोलना पड़ता है क्योंकि वो झूठ नही बोलती तो मारी जाती है और जो सही बोल देती है तो भी अपराधी कहलाने लगती है।

२. **<u>बदलने का अभाव</u>** :- गाँवों और शहरों में इतना अन्तर होता है कि गाँवों की महिलाओं को किसी भी प्रकार का अनुभव नही हो पाता क्योंकि गाँवों में ऐसी व्यवस्था नही होती और शहरों में महिलाओं को अनेक प्रकार की दृष्टिकोण अथवा बदलने की प्रक्रिया को मुख्य प्रकार से जागरूकता में जो कमी होती है उन्हें इस प्रकार का अनुभव होता है यही नारी सशक्तिकरण को बदलने की प्रक्रिया है।

३. **<u>महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत</u>** :- लोग अपनी बेटी को क्यों नही अच्छे से पढ़ाते है क्योंकि उनकी सोंच बिलकुल अलग तरह की होती है। जिसमें वो बेटियो को कमजोर समझते हैं इसीलिये इतना सशक्तिकरण में ये लागू किया गया है कि बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ क्योंकि लड़कियाँ भी लड़कों से कम नही बल्कि लड़कों से कई ज्यादा अधिक हुनर होती है महिलाओं के रास्ते में लक्ष्य होते हैं लेकिन इसमें समय का अलग अर्थ होता है महिलाएँ पूरे परिवार को अलग तरीके से बनाना चाहती है परन्तु महिला की कोई भी सुनता नही

है तो कहाँ से महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण बदल पाएगा । महिला सशक्तिकरण में ये कहा गया है कि जब तक स्वयं को नही बदलोगे तो समाज में व्यक्ति कैसे बदलेंगे समाज में ऐसे कारण होते हैं जिसमें समाज को बदलना मुश्किल लगता है।

४. **समाज सुधार :-** आज कल समाज या परिवार बेटियों को बोझा समझते हैं और सोचते हैं कि इनका कोई मोल नही नही महिला को समाज के प्रति आवाज उठानी चाहिए जिसमें महिलाओं को समाज से किसी भी प्रकार का भयभीत न हो और अपने आस-पास की व्यक्ति को आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। जिससे समाज में महिला सशक्तिकरण की इज्जत और सम्मान हो।

५. **महिला जागरूकता :-** भारत में महिलाओ को अपने प्रति जागरूकता का प्रभाव लाना चाहिए क्योंकि समाज में जब अपने पैरो से खड़ी हो जाती है तभी महिलाओं की समाज में कदर होती है और महिला सशक्तिकरण को जागरूक्ता होने की आवश्यकता होनी चाहिए जिसके कारण महिलाओं को परेशानी न हो और जो चाहे वो कर सके और बाहर या किसी काम में न जाने की रोकथाम रहे जिससे महिलाओं को दुख हो और वो अपना अधिकार न पा सके भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण बनकर समाज को आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होती है और स्वयं को आगे बढ़ाने की कोशिश करती रहती है जिसके कारण महिला को दुख न मिले और आज के पुरुष जो होते हैं तो उनका कोई भरोसा नही रहता कि कब क्या बोले और आज किसी-किसी के घरों में औरतों का सम्मान नही बल्कि तिरस्कार होता है फिर भी महिला अपना फर्ज रीति-रिवाज से निभाती है और समाज में आजकल महिलाओं का सामाजिक दृष्टिकोण ज्यादा है।

नारी एक सफर है

कोमल
बी0ए0 प्रथम वर्ष

आज के युग में हम देखते हैं कि नारियों की ताकत को पूरा विश्व मान रहा है। आज के युग में नारियों पर अत्याचार हो रहा है। लेकिन नारियाँ कुछ नहीं कर पाती हैं। वो अपनी सोंच को आगे नही बढ़ा पा रही है। नारियाँ सांस्कारिक बन्धनों में जकड़ी हुई है नारियाँ भी आगे बढ़कर अपना नाम रोशन करना चाहती है। उनकी भी सोंच है उनके भी इरादे हैं इस युग में अत्याचार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है । लेकिन उस पर कोई रोंक नही लगा रहा है। क्योंकि कहा जाता है कि जहाँ नारी पूजी जाती है वहाँ देवताओं का वास होता है। फिर भी नारी का सम्मान क्यों नही हो रहा है। नारी शक्ति का स्वरूप है। धैर्य सहनशीलता की प्रतिमा है। जिस नारी का समाज में सम्मान करना चाहिए उसी नारी का सब अपमान करते हैं। इन्सान इतना भी नही सोंचता कि जिस नारी का मैं अपमान कर रहा हूँ। उसके बिना मेरा भी कोई अस्तित्व है नर और नारी एक दूसरे के पूरक हैं नर के बिना नारी का और नारी के बिना नर का कोई अस्तित्व नही हैं। नारी से ही सारी दुनियाँ है। आज के युग में नारियाँ भी नाम ऊँचा करती है। घर के बाहर भी नारी ने जमाने के साथ अपनी प्रतिभा फैलायी है।

नारी शक्ति

अधूरी सी जिन्दगी को पूरा कर दिया उसने ।
सारे पर आँगन में प्यार ही प्यार भर दिया उसने।।

ये पाजेब ये झुमका ये गली का घर।
बना दिया है। इन सबने मुझे और भी जिम्मेदार।।

किस्मत वालों को मिलता है। बेटियों का प्यार।
क्योंकि बेटियों से चलता है घर और परिवार।।

दुनिया में माँ बाप को प्यार करती हैं बेटियाँ।
रहकर दूर उनसे माँ बाप का ध्यान देती हैं बेटयाँ।।

बेट क्या लेकर आया बेटी क्या न लायी है।
बहना के बिन सूनी-सूनी हर भाई की कलाई है।।

स्त्री एक सफर

पूजा देवी
बी0ए0 प्रथम वर्ष

स्त्री पर अत्याचार :- स्त्री या बेटियों पर पहले बहुत अत्याचार होते थे लड़कियों को लोग बाहर नही निकलने देते थे न ही उनको पढ़ाते थे और न ही अपने भाई की किताबों को छूने देते थे अगर उनका भाई विद्यालय से घर आता तो उनको खाना देना, कपड़े धुलना, दूध देना यही काम था । लड़कियों से घर का काम करवाना और खाना भी सही ढंगसे नही देते थे लेकिन समय बदला और कुछ लड़कियों को शिक्षा दिलाने लगे लेकिन धीरे-धीरे समय बीतता गया और एक ऐसा समय आया लेकिन अब सब लड़कियों को शिक्षा दिलाने लगे हैं और कुछ लड़कियाँ लड़कों से पढ़ाई में भी आगे हैं और इस समय लड़कियाँ पुलिस भी प्रधान भी है अगर लोग अपने बच्चों को न पढ़ाते तो ये कहाँ सब बन पाते।

मै स्त्री जिंदगी

हर्षिता देवी
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

मै स्त्री जिंदगी की अनसुनी कहानी की तरह
हर सफर में मानव समझता रहा। मुझे पहेली की तरह
इंसानों में नही इंसानियत जो समझे मुझे सहेली की तरह।

मीरा बाई जैसाी नारी लगती साकार व्यथा है
युग-युग से नारी की रही ऐसी करूण कथा है
झाँसी की रानी में जैसे इस माटी को मढ़ा है

जागों जरा इंसानों मत समझो औरत को धूल
वक्त पड़े तो माँ जैसी औरत भी बन जाती शूल
मै नम्र निवेदन करती हूँ, औरत भी होती है फूल

अब तक का सफर कुछ ऐसे कटा थक गई ये जिंदगानी,
बेटी से पत्नी बनी पत्नी से फिर माँ इंसानो ने इस कहा मेरी नादानी।

अब तक जितने गीत लिखे स्त्री की पीड़ा कुछ इस तरह ,
देखे जो स्वप्न सदा से फीके वो टूटे कुछ इस तरह
मैं स्त्री जिंदगी ....

स्त्री एक सफर

नीतू
बी0ए0 प्रथम वर्ष

एक नारी ही तो है जो समाज व घर-परिवार को सुरक्षित ढंग से चला सकती है। एक महिला होने के नाते एक माँ होने के नाते वह अपने बच्चों का पूरा पालन-पोषण बहुत अच्छे ढंग से करती है। नारी चाहे तो घर बना सकती है और चाहे तो बिगाड़ भी सकती है। नारी एक साहसी, दयापूर्ण स्वभाव की माँ के रूप में होती है। नारी को मालूम होता है कि भारतीय समाज में नारी के लिये विवाह में दहेज अनिवार्य है। इसलिये दहेज एक समस्या भी बनती जा रही है। प्रत्येक अखबारों में दहेज की समस्या में नारी को जलाने की व जान से मार दिया जाता है यह फिर वह खुद आत्महत्या कर लेती है।

नारी के प्रति हिंसा :- विवाह के समय नारी अनेक सुन्दर स्वप्न देखती है कि अब हमारा जीवन प्रेम, शान्ति व आत्म-विश्वास के साथ प्रतीत (प्रारम्भ) होगा। परन्तु इसके विपरीत सैकड़ो नारियों के यह सुनहरे सपने टूट-टूट कर बिखर जाते हैं। नारियों को जन्म के बाद से थोड़ा बड़ा होने पर उन्हे दबाव, डाला जाता है और इसलिये उनकी आदत जवान होने पर भी वैसी ही बनी रहती है। वे पति द्वारा मार-पीट की यातना लम्बी गुफाओं में पाती है जहाँ उनके चीखने व चिल्लाने की आवाज सुनने वाला कोई नही होता है दुःख इस बात का है कि उन्हे मार-पीट की जिक्र करने में उन्हें लज्जा महसूस होती है और वे शिकायत भी करती है वो भी उन्हें ही दोषी ठहराया जाता है अतः वे अपनी बात किसी से ज्यादातर नही शेयर कर सकती हैं।

नारी सशक्तिकरण

खुशी
बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष

भूमिका :- सशक्तिकरण से तात्पर्य-किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे यह योग्यता आ जाती है कि वह अपने निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण से भी यह तात्पर्य है कि जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त हों और अपने निर्णय स्वयं ले सके और अपना लक्ष्य खुद निर्धारित करें। भारतीय संविधान के प्रावधान के अनुसार पुरुषों की तरह सभी क्षेत्रों में महिलाओं को बराबर अधिकार देने के लिये कानूनी स्थिति है। भारत में बच्चों और महिलाओं के उचित विकास के लिये इस क्षेत्र में महिला और बाल विकास विभाग अच्छे से कार्य कर रहा है। प्राचीन समय से ही भारत में महिलाएँ अग्रणी भूमिका में थी हालांकि उन्हें हर क्षेत्र में हस्ताक्षेप की इजाजत नही थी। अपने विकास और वृद्धि के लिये उन्हें पल चौकन्ना, मजबूत और जागरूक रहने की इजाजत है क्योंकि एक सशक्त महिला ही अपने बच्चों का भविष्य सुनिश्चित कर सकती है और सशक्त महिला ही देश के उत्थान में भागीदार बन सकती है।

विकास की मुख्यधारा में महिलाओं को लाने के लिये भारतीय सरकार के द्वारा कई योजनाएँ चलायी जा रही है। हमारे देश की जनसंख्या में आधी जनसंख्या महिलाओं की है इसलिये नारियों और बच्चों के विकास के लिये स्वतंत्रता प्राप्त होना एक अहम् मुद्दा है।

भारत एक प्रसिद्ध देश है जो प्राचीन समय से ही अपनी सभ्यता, संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, परंपरा, धर्म और भौगोलिक विशेषताओं के लिये जाना जाता है तथा भारत पुरूषवादी राष्ट्र के रूप में भी जाना जाता है । भारत में महिलाओं को पहली प्राथमिकता दी जाती है लेकिन समाज और परिवार में उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है क्योंकि अभी भी हमारा समाज कुरीतियों से घिरा हुआ है क्योंकि सभी इंसान एक-से नही है। भारत को सभी माँ कहते हैं लेकिन माँ के असली अर्थ को कोई नही समझता।

यह कहना ठीक है कि नारी के स्थान व स्थिति में महिला सशक्तिकरण के प्रभाव से कुछ सुधार आया। किन्तु सशक्तिकरण को सोचकर मन में यह प्रश्न अवश्य उठता है कि क्या सच में महिलाओं को उनके सारे अधिकार प्राप्त है ? ग्रामीण समाज में स्त्री-शिक्षा में काफी प्रगति हुई है कहना सही है पर क्या पूर्ण प्रगति हुई है ? अगर नर और नारी दोनों शिक्षित हुए तभी तो देश आगे बढ़ेगा। नारी के अशिक्षित होने पर क्या अशिक्षित नारी सशक्तिकरण का मतलब समझेगी ? जब वह खुद सशक्त नही होगी तभी तो उस पर अत्याचार होंगे। अतः आज नारी की गरिमा के संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है तभी देश वास्तविक रूप से प्रगति कर सकेगा। राष्ट्र के विकास

में जागरूकता के लिये मातृ दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कई कार्यक्रम सरकार द्वारा लागू किए गए है और चलाए जा रहे हैं किन्तु क्या सभी इनको महत्व देते हैं ? नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आएगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वो हल क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फेसले कर सकें।

महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिये महिला आरक्षण बिल-१०८वाँ संविधान संशोधन का पास होना बहुत जरूरी है। ये संसद में महिलाओं की ३३ प्रतिशत हिस्सेदारी को सुनिश्चित करता है। दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रूप से भागीदार बनाने के लिये कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है। सरकार की महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा। जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके।

इस देश में आधी आवादी महिलाओं की है इसलिये देश को पूरी तरह से शक्तिशाली बनाने के लिये महिला सशक्तिकरण बहुत जरूरी है। उनके उचित वृद्धि और विकास के लिये हर क्षेत्र में स्वतंत्र होने के उनके अधिकार को समझाना महिलाओं को अधिकार देना है। महिलाएँ राष्ट्र के भविष्य के रूप में एक बच्चे को जन्म देती हैं इसलिये बच्चों के विकास और वृद्धि के द्वारा राष्ट्र के उज्जवल भविष्य को बनाने में वो सबसे बेहतर तरीके से योगदान दे सकती है। महिला विरोधी पुरुष की मजबूर पीड़िता होने की बजाय उन्हे सशक्त होने की जरूरत है इसके लिये महिलाओं को अपने आत्म सम्मान को जगाए रखना होगा।

महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है ?

रिचा त्रिवेदी
बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष

भारतीय नारी के साथ विरोधाभास की स्थितियाँ सदैव रही पहले भी थी और आज भी है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों में

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

सूत्र वाक्य द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसका अर्थ यह है कि- **जहाँ नारी पूज्यनीय होती है वहाँ देवता निवास करते है**। देश में जहाँ एक ओर लक्ष्मी, सीता, दुर्गा, पार्वती के रूप में नारी को देवतुल्य माना जाता है। वहीं उसे अबला बताकर परम्परा एवं रूढ़ियों की बेड़ियों में भी जकड़ा जाता है। यदि आजादी के बाद कुछ कार्यक्रमों व योजनाओं को छोड़ दिया जाय तो राजनैतिक क्षेत्र में लैंगिक विषमता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यही कारण है कि महिलाओं के लिये सबसे महत्वपूर्ण माने जाने वाला **महिला आरक्षण विधेयक** लागू नही हो पाया है। इसके तहत लोकसभा एवं राज्यविधान सभाओं में महिलाओं को ३३ प्रतिशत आरक्षण देने के लिये चक्रानुकम पद्यति का प्रावधान किया गया है। ऐसा नही है कि भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयास नही हुये हैं। हमारे देश में नारी शक्ति को बल देकर महिलाओं के उन्नयन के प्रयास बराबर जारी है। महिलाओं के लिये अनेक कानूनी विधेयक लाए गये हैं जैसे अनैतिक व्यापार विरोधक अधिनियम 1959 प्रसूति प्रसुविधा अधिनियम, 1976 में सती, निषेध अधिनियम 1987 में दहेज निरोधक कानून, 1961 में घरेलू हिंसा से महिलाओं के सुरक्षा अधिनियम 2005, यौन उत्पीड़न कानून 2012, अपराधिक कानून संशोधन अधिनियम 2013 का प्रावधान किया गया है। इसके अलावा इस साल निर्भया कोश का सरकार के बजट में प्रावधान किया गया है। जिसके केन्द्र सरकार प्रतिवर्ष 1000 करोड़ रूपये रखती है। निर्भया कोष के अन्तर्गत महिला उत्पीड़न के सन्दर्भ में उनके सशक्तिकरण के लिये और कई प्रकार की योजनाएँ चलायी जा रही है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा नारी शक्ति को बल देने हेतु कई योजनाओं को व्यवहार में चलाया जा रहा है। जैसे- **अबला जननी सुरक्षा योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, लाडली योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, तेजस्वनी योजना।** ये सारी योजनाएँ उस समय तक सफल नही हो सकती जब तक धरातल

पर पुरुष की मानसिकता पर बदलाव नही आ जाता ।

महिला को सम्मान दिलाना है महिला।

सशक्तिकरण के संदेश को सब तक पहुँचाना है।

आज भी घटता लिंगानुपात, बालिका भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न, बंधुआ मजदूरी बाल तस्करी जैसी कुरीतियाँ हमारे देश के सामने एक विकट समस्या बनी हुयी है। महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में वर्तमान समय में जन-जन तक यह संदेश पहुँचाने की आवश्यकता है कि महिला सशक्तिकरण देश के विकास की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका हो। अपने निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फेसले लेने के लिये महिलाओं को अधिकार देना ही महिला सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण

मधु द्विवेदी
बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष

नारी ही शक्ति है नर की,
नारी ही शोभा है नर की।
जो इसे उचित सम्मान मिले,
घर में खुशियों के फूल खिले।

लैंगिक असमानता भारत में मुख्य सामाजिक मुद्दा है, जिससे महिलाएँ पुरुषवादी प्रभुत्व देश में पिछड़ी जा रही है जिस प्रकार से किसी रथ को सुचारू रूप से चलाने हेतु दोनों पहियों की बराबर भूमिका है ठीक उसी प्रकार समाज में साम्यावस्था बनाये रखने हेतु महिलाओं का सशक्त होना आवश्यक है महिला सशक्तिकरण को साधारण रूप से इस प्रकार समझा जा सकता है महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं के शक्तिशाली होने से है जिसमें वे अपनी जिंदगी से सम्बन्धित हर फेसला ले सके तथा समाज में अच्छे से रह सके अतः हम कह सकते हैं कि ''समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है।''

"स्त्री पुरुष की गुलाम नही- सहधर्मिगी अर्द्धांगिनी और मित्र है।"

जिस समाज में नारी का स्थान सम्मानजनक होता है, वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है परिवार और समाज के निर्माण में नारी का स्थान सदैव महत्वपूर्ण रहा है जब समाज सशक्त और विकसित होता है तब राष्ट्र भी मजबूत होता है इस प्रकार राष्ट्र के निर्माण में नारी केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह करती है माता के रूप में नारी प्रथम गुरु होती है।

आजादी के बाद ऐसा सोचा गया था कि भारतीय नारी एक नयी हवा में सॉस लेगी तथा शोषण और उत्पीड़न से मुक्त होगी, किन्तु ऐसा नही हुआ। आजादी के बाद कानूनी स्तर पर नारी को सशक्त बनाने के प्रयास तो

खूब हुए किन्तु सामाजिक स्तर पर जो बदलाव आना चाहिए वह परिलक्षित नही हुआ जिसका मुख्य कारण रहा, हमारी पुरुष प्रधान मानसिकता जिसे हम कभी बदल ही नही पाए और नारी के प्रति हमारा रवैया दोयम दर्जे का रहा। यही कारण है कि वैदिक काल में जो नारी शीर्ष पर थी, आज उसके सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस की गयी।

भारत वर्ष एक पुरुष प्रधान समाज है जहाँ पुरूषों का आर्थिक दायित्व तथा महिलाओं पर परिवार की जिम्मेदारी होती है तथा साथ ही साथ कुछ पांबदियाँ भी होती है। भारत की लगभग ५० प्रतिशत आबादी महिलाओं की है अतः देश के विकास में इनका योगदान भी अतिआवश्यक है 'परन्तु भारतीय महिलाएँ अभी पूर्ण से सशक्त नही है तथा कई प्रकार की पांबदियों से बँधी है। अतः राष्ट्र में विकास के ओर महिलाओं की स्थिति सुधार करने हेतु सशक्तिकरण आवश्यक है।

भारत सरकार के प्रयास :- महिलाओं को सशक्त करने हेतु भारत सरकार ने कई विशेष प्रकार के कदम उठाये जिनसे से कुछ निम्न है।

1- महिला उत्थान नीति 2009

2- सन् 2001 में ही भारत सरकार ने भारतीय तलाक (संशोधन अधिनियम) तथा घरेलू हिंसा अधिनियम पारित किया।

3- महिला शांति पुरस्कारों की घोषण की।

4- आर्थिक सशक्तिकरण हेतु भी कदम उठाये।

परन्तु इन सभी प्रयासों के बाद भी सशक्तिकरण इतना प्रबल नही हो सका इसमें अभी सुधारों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :- भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिये महिलाओ के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा आज के समाज में जरूरत है कि हम महिलाओं के लिये पुरानी सोच को बदले और उनके सशक्तिकरण के लिये कदम उठाये।

महिला सशक्तिकरण

प्रियांशी देवी
बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष

साधारण शब्दों में ''महिलाओं के सशक्तिकरण का मतलब है कि महिलाओं को अपनी जिन्दगी का फैसला करने की स्वतंत्रता देना या उनमें ऐसी क्षमताएँ पैदा करना ताकि वे समाज में अपना सही स्थान स्थापित कर सके।''

प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से समान नही रही है प्राचीन भारत में महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा प्राप्त था। किन्तु धीरे-धीरे सभी प्रकार की भेदभावपूर्ण प्रथाएँ बाल-विवाह, देवदासी प्रणाली, नगर-वधू, सती-प्रथा आदि से शुरू हुई। महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक अधिकारो को कम कर दिया गया स्त्री और परिवार के पुरूष सदस्यों पर पूरी तरह से निर्भर हो गई। शिक्षा के अधिकार, काम करने के अधिकार, खुद के लिये फेसला करने के अधिकार उनसे छीन लिये गये।

पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक असमानता और बुरी प्रथाओं को हटाने के लिये सरकार द्वारा कई सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाये और लागू किये गये है हालाकि ऐसे बड़े विरोध को सुलझाने के लिये महिलाओं सहित लगातार सभी के सहयोग की जरूरत है।

आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरूक है जिसका परिणाम हुआ कि कई सारे एन.जी.ओ. इस दिशा में कार्य कर रहे है देश की प्रगति में पुरूषों के साथ-साथ महिलाओं की भागीदारी अतिआवश्यक है। संसार के सृजन एवं संचालन में नारी का स्थान पुरूष से बढ़कर है।

नारी सशक्तिकरण

रिचा मिश्रा
बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष

नारी सशक्तिकरण :- नारी जीवन एक महान जीवन माना गया है। नारियों के बारे में वेद, पुराणों में इनका व्याख्यान किया है। हमारे देश में अनेक नारियाँ हुयी। जिन्होंने स्वयं दुष्टों का बलिदान किया। एक नारी जीवन दो परिवारों का पालन पोषण करती है। नारी बिना किसी वेतन के या बिना किसी लाभ के निरन्तर कार्य करती रहती है। नारी के द्वारा ही इस सृष्टि की रचना हुयी। पहले तो नारियों का कोई महत्व न ही था, न ही उन्हे बाहर निकाला जाता था और न ही वेद पुराण पढ़ने का अधिकार था और उनको बिल्कुल निम्न स्तर का जीवन व्यतीत करना पड़ता था। लेकिन अब ऐसा नही है और फिर धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ फिर बहुत सी ऐसी वीर नारियाँ हुयी जिन्होंने स्वयं पुरुषों का हक छीन लिया। और धीरे-धीरे नारियाँ स्वयं इतना आगे निकल गयी। वह चाहे दिमाग से हो चाहे बल से हो चाहे जिसमें हो। अब तो नारियों का स्थान पुरूषों से ही आगे बढ़-चढ़ के है। चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या इलेक्ट्रीशियन के क्षेत्र में हो या अन्य किसी नौकरी में हो। परन्तु नारियों का सम्मान कही-कही अब भी नही होता है।मेरे ख्याल से तो नारियों के साथ-साथ पुरूषों का भी होना अनिवार्य है क्योंकि बिना पुरुष के सृष्टि का निर्माण नही होता है। परन्तु नारी जीवन एक ऐसा जीवन है जो कि सब कुछ सहन करके अपना कार्य करती है। और अब तो सभी जगह नारी सशक्तिकरण पर ही जोर दिया जा रहा है क्योंकि पुरुषों के द्वारा इतनी घिनौनी हरकतों से मजबूर होकर नारियों को और भी बढ़ावा दिया जा रहा है और दिया भी जाना चाहिए।

नारियों के जीवन में बहुत सारी कठिनाइयाँ होती है। लेकिन कठिनाइयाँ आने के बावजूद भी कभी वो निराश नही होती है और वह निरन्तर अपने कार्य में लगी रहती है। नारी दो परिवार चलाती है या दो परिवारों को शिक्षत कराती हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी को भी अपने अनुसार शिक्षित कराती है

महिलाओं के प्रति बदलता दृष्टिकोण
कितना सच कितना झूठ

प्रिया शुक्ला
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

जिस समाज में नारी का स्थान सम्मानजनक होता है। वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है। परिवार एवं समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। जब समाज सशक्त एवं विकसित होता है। तब राष्ट्र भी मजबूत होता है। इसी प्रकार राष्ट्र निर्माण में नारी केन्द्रीय भूमिका निभाती है।

महिलायें देश को आगे बढ़ाती हैं,
समाज को तरक्की के राह पर लाती हैं।

वैदिक काल में नारियों का स्थान बहुत सम्मानजनक था और अखण्ड भारत विदुषी नारियों के लिये जाना जाता था। कहा भी गया है -

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''

लेकिन कालान्तर समाज में नारी का स्थान गिरने लगा और मध्यकाल में दयनीय स्थिति में आ गया ।वर्तमान में उसी अवनति के अवशेष मिलते हैं। आज लड़की के पैदा होने पर खुशी नही मनायी जाती। घर परिवार और समाज में लड़के और लड़की का भेद बराबर है। इसका ज्वलन्त उदाहरण है- दहेज प्रथा। लड़कियां योग्य हों पढ़ी लिखी हो सब प्रकार से कुशल हों यह अपेक्षा होती है परन्तु लड़कों के लिये दहेज जरूरी होता है। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारे समाज में स्त्रियों की स्थिति कितनी दयनीय है।

सम्मान, वापसी और प्यार,
महिला सशक्तिकरण का आधार।

हालाकि और अधिक अच्छे परिणामों के लिये पुरुष प्रधान के माइन्ड सेट में बदलाव की आवश्यकता अभी भी है।

महिला सशक्तिकरण

शिवा देवी
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

कोई भी देश तरक्की के शिखर पर तब तक नही पहुँच सकता,
जब तक उसकी महिलाएँ कंधे से कंधा मिलाकर न चले।

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वो अपनी जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती हैं। परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हे सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। नरेन्द्र मोदी जी द्वारा महिला दिवस पर कहा गया कि देश की तरक्की के लिये पहले हमें भारत की महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। एक बाद जब महिला अपना कदम उठा लेती है तो परिवार आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर बढ़ता है।

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है जैसे :- दहेज प्रथा, यौन हिंसा, अशिक्षा, भ्रूण हत्या, असमानता महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा कार्य सील पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, वैश्यावृति, मानव तरक्की और और ऐसे ही दूसरे विषय, लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अन्तर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढकेलता है।

भारत के संविधान में लिखे गये समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिये महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है। हमारे देश में महिलाओं को सर्वप्रथम प्राथमिकता दी गयी है।

तू ही धरा, तू सर्वथा। तू बेटी है, तू ही आस्था।।
तू नारी है, मन की व्यथा। तू परंपरा, तू ही प्रथा।।

लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में नारी सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए। ये जरूरी है कि महिलाएँ शारीरिक मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हो सकती है।

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ

विकास कुमार

डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

बेटी बचाने एवं उसे पढ़ा लिखाकर योग्य बनाने के लिये जब तक हम संवेदनशील नही है। हम अपना ही नही आने वाली सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी एक भयानक संकट को निमन्त्रण दे रहें हैं। बेटियाँ देश का भविष्य है, इतिहास गवाह है कि जब भी स्त्रियों को मौका मिला उन्होंने अपनी उपलब्धियों और योग्यताओं से कीर्तिमान सािपित किये है, चाहे वो कल्पना चावला हो या सुनीता विलियम्स हो, इन्दिरा गाँधी हो, साइना नेहवाल या प्रतिभा पाटिल हो, सभी ने अपने-अपने क्षेत्र में भारत का नाम ऊँचा किया है, लेकिन यह सब तभी हो सका, जब उन्हें बचाया एवं पढ़ाया गया। ''एक बेटी के शब्दों से हम बेटियों को बचाने, पढ़ाने की भावना को शायद आसानी से समझ सकेंगे।''

''हर लड़ाई जीत-जीत कर दिखलाऊँगी
मै अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी
चन्द लोगों की पुकार सुन ली,
मेरी पुकार न सुनी
मैं बोझ नही भविष्य हूँ
बेटा नही पर बेटी हूँ

महिला सशक्तिकरण के मायने

नीलम देवी
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

महिलायें आज आसमान की बुलंदियों को छू रही हैं। अपने सपने का साकार करने के लिये वे हर मुमकिन कोशिश भी कर रही है। काफी हद तक उन्हें सफलता मिली है, पर क्या, वास्तव में महिलाओं को उनका मुकाम हासिल हुआ है।? घर की दहलीज पार करके वह पुरुषों की बराबरी करने के लिये कंधे से कंधा मिलाकर काम भी कर रही हैं। उसने उन क्षेत्रों में भी अपनी छाप छोड़ी हैं, जहाँ पहले सिर्फ पुरुषों का ही वर्चस्व था। राजनीति के दाव-पेंच हो गया, या व्यापार जगत, या फिर खेल का मैंदान, महिलाओं ने आज हर क्षेत्र में अपनी जगह बना ली हैं कि समय-समय पर महिला सशक्तिकरण का मुद्दा भी सामने आता रहता है, लेकिन ! बहस और चर्चाओं के दौर में यह विषय फिर एक बार ज्वलंत हो उठा है, हमारे सामने कई सवाल भी बड़े आकार में सामने आ खड़े हुए हैं और मेरे अन्दर का इंसान सोचने पर मजबूर हैं।

आखिर ये महिला सशक्तिकरण हैं क्या ? ..... आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो जाना। क्या महिलाओं को समाज में जगह मिल जायेगी ? जब ये किसी भी तरफ से हावी होता है तो कमजोर कड़ी टूट जाती है यानी जिम्मेदार सिर्फ औरत हैं। इससे ज्यादा और कुछ नही इसलिये जरूरत हमारे सोच के बदलाव में है भारत ही नही दुनिया के किसी भी दूसरे देश में महिलाओं की स्थिति कमोबेश एक ही है।

आए दिन अखबार के पन्नों और तमाम न्यूज चैनलों पर महिलाओं के साथ अत्याचार और भेदभाव की खबरों में रहती है। हमें यह सोचने पर मजबूर भी करती हैं। महिलाओं को सचमुच उनका अधिकार मिला है। क्या वास्तव में वो निडर होकर जीने की कल्पना कर सकती हैं क्या ? आज भी वह कदम-कदम पर असुरक्षा की भावना लिये हुये जी रही हैं। वह अपनी सुरक्षा को लेकर आश्वस्त क्यों नही हो पायी हैं? ये डर आदमी और औरत में बराबर हैं। बेटियाँ और बहुएँ तो अपने घर में भी सुरक्षित नही हैं। आज भी दहेज हत्या, यौन उत्पीड़न, बलात्कार के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं और वे इन वारदातों को अंजाद देते हैं वे और भी ज्यादा

सहमे हुये हैं। इस घटना के घातक परिणामों से वाकिफ होने की वजह से वे भ्रूण हत्या, बाल विवाह पर ही चलते हैं । इस पर अब तक लगाम नही कसा जा सकता। ये डर जितना ही फैल रहा है, समस्या उतनी ही गम्भीर होती जा रही हैं और न ही कोई सोच कायम हुयी हैं। फिर हम आखिर किस महिला सशक्तिकरण की बाते करते हैं। किस आधार पर हमें दावा दिया जाता है या राजनेता के आधार पर कि आधी आबादी को उनका हक मिल गया हैं।

सच तो यह है कि महिला सशक्तिकरण करना उस मुराद की तरह है जिसकी पूरी होने की उम्मीद बहुत कम नजर आती है।

महिलाओं के प्रति बदलता दृष्टिकोण कितना सच कितना झूठ

कीर्ति

डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

नमस्कार! मेरा नाम कीर्ति है। मैं महिलाओ की स्थिति, उनके प्रति बदलते दृष्टिकोण के बारे में अपने विचार व्यक्त कर रही हूँ

महिलाओं के प्रति बदलते दृष्टिकोण को न तो पूरी तरह सकारात्मक माना जा सकता है और न ही नकारात्मक। हम सब जानते हैं कि आज के समय में महिलायें हर क्षेत्र में उन्नति कर चुकी है चाहे वह क्षेत्र चिकित्सा, औद्योगिकी, प्रौद्योगिकी, खेल, राजनीतिक जगत या देश की सुरक्षा हो महिलायें अव्वल है।

लेकिन हम इस बात से भी इंकार नही कर सकते कि महिलाओं ने किसी भी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हो लेकिन समाज में आज भी बदलाव नही है अभी भी महिलायें सुरक्षित नही वयस्क ही नही छोटी बच्चियों के साथ होने वाले घिनौने अपराध के सबूत है जो इंसानियत को सर्मसार करती है।

बात आती है शिक्षा की तो आज लगभग पूरा देश ही शिक्षित है खेल के क्षेत्र में पी०वी० सिन्धु, साक्षी मलिक, साइना नेहवाल, कानूनी जगत से सुजाता सान्याल पहली महिला डी०जी०पी० बनी खेल, राजनीति में और व्यापार में सोनिया गाँधी, ममता बनर्जी, चंद्राकोचर, सुषमा स्वराज, अरूंधति राय, किरण बेटी, अरूंधति भट्टाचार्य, किरन मजूमदार, मैरी कॉम आदि बहुत सारी महिलाओं ने भारत का नाम रोशन किया है।

पढ़ी लिखी समाज होने के बाद भी स्थिति में कोई सुधार नही, आज भी दहेज के लिये नारी को प्रताड़ित किया जाता है हत्या कर दी जाती है क्यों ? वह बेटियाँ जो देश का उज्जवल भविष्य बन सकती है उन्हे वेश्यावृत्ति पर मजबूर होना पड़ता है क्यों ?

बेटी, बहू, पत्नी बनकर एक औरत ही कुर्बानी देती है क्यों ? क्यों पुरूषो को प्रथम स्थान प्राप्त है इस समाज में ? क्या बेटियाँ बेटो से कम है ? क्यों समाज में भ्रूण हत्या वैसे पाप अभी भी होते हैं ? पुरूषों को छूट और औरतों पर समाज इतनी पाबंदी लगाता है ?

हमें यह मानसिकता बदलनी ही होगी। हमें अपने समाज को अपना अस्तित्व बताना ही होगा। हम बेटियाँ बेटो से कम नही। हमें अपनी आजादी, अपने अधिकारों के लिये लड़ना ही होगा। हमें खुद को साबित करना ही होगा। हम बेटियाँ वरदान है। माँ दुर्गा। काली का स्वरूप है। हमसे ही संसार है। हम इस सृष्टि का आधार है।

माँ दुर्गा की शक्ति हूँ।
मैं भी पढ़ लिख सकती हूँ।।
माता-पिता की सेवा मैं भी जानूँ।
अपने फर्ज को भी पहचानूँ।।
मुझे है खुद पर अभिमान।
हाँ मै बेटी हूँ वरदान।।

महिला सशक्तिकरण

वन्दना देवी
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

जैसा कि हम सब जानते हैं कि 8 मार्च को पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं नारी सशक्तिकरण का अर्थ है नारी का उल्लेख करना। आज के समय में महिलाओं की स्थिति में पहले की अपेक्षा बदलाव आये है पहले के समय नारियों के लिये शिक्षा पर प्रतिबन्ध था तथा उन्हे घर गृहस्थी के कामों को करना सिखाया जाता था अपने फैसले लेने का अधिकार आदि किसी भी प्रकार के अधिकार महिलाओं के लिये नही थे उन्हें लड़कों से हमेशा अलग समझा जाता था। हमें नहीं भूलना चाहिए कि महिलायें आधी आबादी का हिस्सा है सरकार को उन्हें इनका उचित अधिकार देना चाहिए उन्हें संसद में 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जाना चाहिए महिलायें हमारे समाज की रीढ़ है जब लड़की अपने घर में रहती है तब सब बोलते हैं बेटी पराये घर की है जब वो ससुराल जाती है तो ससुराल वाले कहते हैं लड़की पराये घर से आयी है इन लड़कियों को कोई नही समझता। हमारे संविधान में नीति अधिकारों में महिला सशक्तिकरण की नीति विकसित हुई है। अनुच्छेद 14 में महिलाओं को समानता का अधिकार सुनिश्चित करता है। अनुच्छेद 15 में राज्य को महिला के पक्ष में सकारात्मक कार्यवाही करने का अधिकार देता है और हम सब नारियों को इसका लाभ भी उठाना चाहिए भारत की महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के लिये अधिकार महिलाओं को देना ही सशक्तिकरण है महिलाओं अपने श्रम को समझे और चेतना सम्पन्न बने इसके लिये आवश्यक है कि वे शिक्षित हो व जागरूक हो।

बालिका भ्रूण हत्या

प्रतिभा सिंह
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

जीने दो मुझे, मैं भी जिंदा हूँ
क्या दोष मेरा ? हूँ मैं हिस्सा तेरा
ऐसे सम्मान पर , मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।

कहलाती पराई सदा ही रही
जन्म मिला तो, मृत्यु सा दर्द सही
हैवानों मुझ पर दया करो
ना कुचलो मुझे हया करो।।

संसार का सर्जन तो मैंने किया
ऐ तभी तुझे भी जन्म दिया
फिर क्यों कोख में मुझको मार रहा
मैं तड़प रही हूँ, सिसक रही
जीवन की भिक्षा माँग रही
तुम वैसी ही तो मैं भी हूँ
जीने दो मुझे, मैं भी जिन्दा हूँ।

महिला सशक्तिकरण

सृष्टि सक्सेना
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

"स्त्री पुरुष की गुलाम नही
सहधार्मिणी, अर्धागिनी और मित्र है।"

जिस समाज में महिलाओं का स्थान सम्मान जनक होता है। वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है। हमारे देश में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण जितना अच्छा होना चाहिए, उतना अच्छा नही है। परिवार और समाज के निर्माण में नारी का सहयोग सदैव महत्वपूर्ण रहा है। मगर पहले भी और आज भी हम महिलाओं के प्रति उनकी सोच बदल नही पाये है। कही न कही उनकी कमजोरी का लोग फायदा उठा ही लेते हैं और जब परिवार समाज, एवं राष्ट्र तक सच्चे अर्थो में प्रगति की ओर अग्रसर नही हो सकता जब तक वह नारी के प्रति भेदभाव, निरादर, अथवा हीनभाव का त्याग नही करता है।

आजादी के बाद ऐसा सोचा गया कि महिलाओं को नई हवा में सॉस लेगी तथा शोषण और उत्पीड़न में मुक्त होगी। किन्तु ऐसा नही हुआ, आजादी के बाद कानूनी स्तर पर नारी को सशक्त बनाने के प्रयास तो बहुत हुए किन्तु सामाजिक स्तर पर जो बदलाव आना चाहिए वह परिवर्तन नही हुआ जिसका मुख्य कारण हमारी पुरुष प्रधान मानसिकता जिसे हम कभी बदल नही पाये।

वर्तमान समय में जन-जन तक यह संदेश पहुँचाने की आवश्यकता है कि महिला सशक्तिकरण देश के विकास की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। आज के समय महिला पुरुषों के बराबर खड़ी हो चुकी है। देश में समाज में, अपना बहुत योगदान कर रही है। शिक्षा से लेकर, नौकरी, व्यवसाय आदि सब में हाथ बटाती है। शिक्षा के दम पर आर्मी सेना हो या पॉयलट सब पर अपना झंडा लहराती है। अपने पैरो में खड़ी होकर अपना और दूसरों का जीवन आसानी से काट रही है। आज के समय महिलायें पुरुषओं पर आश्रित नही है।

"मै भी छू सकती हूँ आकाश
मौके की है मुझ तलाश।"

स्त्री/नारी

सृष्टि सक्सेना
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

" सरल भाषा में कहूँ, स्त्री यानी "अगरबत्ती"
जिसमें आग भी है, धीरज भी है। सहनशीलता भी है ....
अपने आप को धीरे-धीरे जलाकर अपने
परिवार को सुंगन्धित करने की ताकत भी है।"

नारी शक्ति

रोशनी की कीमत पहचान ली
परवाह नही अब किसी रिश्ते की
आदत नही शिकायत की
उम्मीद है सफलता की
नन्हा सपना दुआओं के असर से
तन्हा जीवन में खुशियाँ भर देगा
चाहत है इतनी, अब डर नही है।
जवाब है मार्ग है, विकल्प है।
नारी की आजादी अब
आवरण नही श्रद्धा का
क्षमता पहचान ली है अपनी
अटल है इरादा, कहानी नही
हकिकत है जमाना है "नारी शक्ति का"

हमें मालूम है हमारी हत्या का सबब

सुमति वर्मा
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

मै भी लेटी श्वास हूँ
पत्थर नही इंसान हूँ

जज्बातों में जीती हूँ
बेटा नही, पर बेटी हूँ

तुम से ही बनी हूँ
बस प्यार की भूखी हूँ

दिया नही कोई मौका
बस पराया बनाकर सोचा

हर लड़ाई जीतकर दिखाऊँगी
मैं अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी

मैं बोझ नही भविष्य हूँ
बेटा नही, बेटी हूँ

कोमल मन है मेरा
वही भोला -सा है चेहरा

कैसे दामन छुड़ा लिया
जीवन के पहले ही मिटा दिया

जीवन पार लगा दूँगी
अपनालों, मैं बेटी नही बेटा बनूँगी

एक बार गले से लगा लो
फिर चाहे हर कदम आजमा-लो

चंद लोगों की सुन ली तुमने
मेरी पुकार ना सुनी

महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण कितना सच कितना झूठ

हर्ष वर्मा
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

मै ना ही कोई कवि हूँ ना ही कोई लेखक मैने आज कल स्त्री जाति की मर्यादा का पतन देखा है यह कितना सफल या असफल है मै यह पूरा, तो नही कह सकता पर जो मैने देखा है वह यह है कि स्त्री जाती से मेरी कोई दुश्मनी या पुरानी रंजिस नही है, मै तो खुद एक स्त्री जाति के गर्भ से जन्मा हुआ हूँ मेरी भी माँ और बहन स्त्री ही है। मै आजकल स्त्री का नैतिक तथा मर्यादा का पतन समाज का जो अभय है उसको देखकर स्त्री के लिये लिख रहा हूँ कुछ लाइने-

क्या स्त्री तेरी यही कहानी
ना है तन पर वस्त्र, न माथे पर पानी
क्या स्त्री तेरी यही कहानी
कभी हुआ करती तू घर की रानी
आज हाय बन गई तू मुखर्जी रानी
कभी सुनाया करती वीरो की कहानी
आज है मुँह में तेरे मसाला-पानी
क्या स्त्री तेरी यही कहानी।।

इन लाइनों से मैं स्त्री को कुछ गलत नही कहना चाहता हूँ पर कुछ को देखकर यह कहा है कि मैने और कुछ पर तो इस तरह से अत्याचार हो रहा है कि वो उनको सहने की आदत डाल चुकी है और इस आदत से ही समाज में मनुष्य या पुरुष खुद को बहुत महान समझता है।

रे नर ठहर, रहम मत कर, वो आधे कि अधिकारी है एक नही दो-दो मात्राये, नर से भारी नारी है क्या वो समाज का अंग नही ? क्या ये उसका अधिकार नही अगर सरे प्रश्न सार्थक है, तो क्यों वो सब कुछ हारी

है एक नही दो-दो मात्रायें, नर से भारी नारी है!

यह बात तो तब साबित होती है कि जब सभी पुरुष अपनी माँ और बहनों को जिस तरह इज्जत देते हैं उसी तरह सभी महिलाओं को आदर सत्कार देते व जाकर हमारे मन और दिमाग में यह बैठेगा कि स्त्री वो है जो कि अपना सारा जीवन अन्जान के लिये व्यर्थ करती रहती है स्त्री चाहे उसका पति हो या उसका पुत्र और या उसकी पुत्री वह अपना प्रेम किसी से भी कम प्रेम नही करती है सबसे बराबर प्रेम करती है और वो तो अपनी कोख में जिसे पालती है उसको तो वह यह नही जानती की वह लड़का है या लड़की वो उसका ख्याल रखेगा या नही फिर वह उसे एक नया जीवन देती है। यही हमारे नजरिये से महिलाओं का सामाजिक दृष्टिकोण है।

स्त्री एक सफर

स्त्री एक सफर यह बात तो बहुत ही पुराने से देखते आ रहे हैं कि स्त्री का जीवन एक सफर की तरह ही व्यतीत होता है और वह उसे और भी अच्छे से बनाने की कोशिश में लगी रहती है विश्वरूपी अंकुर के दो पत्ते है ''नर और नारी'' इस दोनो के सहयोग से ही पूरा गृहस्थ जीवन सफल होता है और जब भी व्यक्ति का या किसी ऐसे मनुष्य का कार्य सफल होता है जिसका बहुत नाम ही उसके सफलता के पीछे भी एक स्त्री का हाथ होता है।

''स्त्रियों की अवस्था में सुधार होने तक विश्व के कल्याण का कोई भी मार्ग नही है। किसी भी पक्षी का एक पंख के बिना उड़ जाना बिल्कुल सम्भव नही है। इसलिये स्त्री को अपनी पहचान नही भूलना चाहिए और न ही अपना सम्मान और अधिकार खोना चाहिए।

स्त्री का बचपन

जब वह स्त्री किसी स्त्री की कोख से जन्म लेती है तो कुछ लोग ऐसे भी होते है जो कि कन्या को या लड़की को जीवन ही नही देना चाहते हैं फिर उस बेटी की माँ के लिये वह उसी की बेटी होती है और वह अपने पास रखती है समाज भी कभी-कभी किसी स्त्री का साथ नही देता है फिर भी वह हिम्मत नही हारती है और खुद को याद दिलाती है कि एक झाँसी की रानी भी थी जो वीर बनी थी और समाज में और अपने परिवार में नाम कमाया था जिसने इसलिये समाज ने एक अभियान भी चलाया था।

"बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ"

क्योंकि कुछ लोग बेटियों को शिक्षा नही दिलाते हैं बल्कि उनका यह कहना होता है कि वह दूसरे पर जाएगी तो इसका क्या मतलब होता है कि वह अपना अधिकार नही ले सकती या उसका कोई हक नही होता। अपना जीवन जीने का की खुद से जीवन जी सके।

स्त्री का वैवाहिक जीवन

स्त्री का दूसरा पड़ाव जो होता है वो लोग वैवाहिक जीवन में ही बताते हैं क्योकि आजकल न तो स्त्री ठीक से पढ़ पाती है और ना ही वह कुछ आगे बढ़ने के लिये कर पाती है जब उनका विवाह उम्र से पहले हो जाता है जिसे कहते है जो कानूनन अपार है वह स्त्री अपनी वैवाहिक जीवन में भी खुश नही रहती है कभी वह किसी कारण से या दहेज के कारण से अत्याचार सहती है उसका गरीब होना या गरीब पैदा होना उसके लिये काल बन जाता है स्त्री का अत्याचार सहना ही बहुत बड़ा गुनाह होता है। स्त्री को अपना जीवन खुद के तरीके और अपनी इच्छाओं से जीना चाहिए।

स्त्री एक माँ, एक बहन, एक बेटी

स्त्री को ही माँ का भी दर्जा दिया जाता है और वही सबकी रक्षा करती है वही हमारे जीवन की एक मात्र सहारा होती है- स्त्री वह चाहे किसी बहन के रूप में हो या माँ के रूप में और पत्नी के रूप में या चाहे बेटी हो सभी हमारे लिये एक सहारा होती है। अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखा में पानी मुक्त करो नारी को मानव, चिरवन्दिनी नारी को।।

सशक्तिकरण

किरन वर्मा
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

<u>सशक्तिकरण का अर्थ</u>

वह क्रिया जिसके द्वारा किसी विशेष समुदाय को किसी विशेष क्षेत्र में शक्ति प्रदान करना। जो किसी कारण वश समाज में पिछड़ चुके हैं, चाहे वह गरीब वर्ग हो, शोषित वर्ग हो या फिर महिला वर्ग हो। महिला दिवस 08 मार्च को मनाया जाता है महिला सशक्तिकरण की आवाज आज संसार के कोने-कोन तक गूंज रही है, और जल्द ही इसका असर नजर आएगा। जिस दिन महिलाओं की हिस्सेदारी विकास में बराबर होगी। उस दिन विश्व की रफ्तार की दर दो गुनी हो जाएगी।

आज महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता पड़ रही है, इसके लिये पुरुष वर्ग जिम्मेदार है, जिसने सदैव ही महिलाओं को कम आंका है। यही कारण है कि सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, राजनीतिक स्तर तथा कानूनी स्तर पर महिलाएं पीछे पायी जाती रही हैं।

इसीकारण महिला सशक्तिकरण होना अत्यन्त जरूरी है और महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ाने की आवश्यकता है, जिससे वह स्वयं अपने लिये सही कदम उठा सके एवं सशक्त होकर देश के विकास में बराबर का सहयोग दे पाएं। परन्तु समय के साथ-साथ स्थितियाँ इस ओर अग्रसर हो रही है जो कि एक बहुत ही शुभ एवं खुशी की सूचना है।

महिला सशक्तिकरण

मेनका देवी
डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

नारी हूँ मैं!
ममता की छांव जनम देने वाली जननी हूँ मैं।
दुःख-सुख में हमेशा साल देने वाली भार्या हूँ मैं।
माँ-बाप की आन-बान सान सम्मान हूँ मैं।
हाँ एक बेटी-पापा की प्यारी हूँ मैं।
भाई की ताकत .... अच्छी दोस्त हूँ मैं।
करती पूर्ण पुरुष को ऐसी स्त्री हूँ मैं।
नारी हूँ मैं!
फिर क्यों दुनियाँ में नही लाई जाती हूँ मैं।
जन्म कहाँ कोख में मारी जाती हूँ मैं।
नर-नारी तेरी कुदरत, फिर क्यों उपेक्षित हूँ मैं।
जवानी की दो सीढ़ियाँ चढ़ी नही कि रोंकी जाती हूँ मैं।
बेटी, बहन, माँ बच्ची, बूढ़ी और पत्नी भी हूँ मैं।
फिर क्यों हर स्वरूप में बालात्कारी से कुचली जाती हूँ मैं।
नारी हूँ मैं।
सुनो, नारी हूँ, अबला नही, दुर्गा स्वरूप हूँ मैं।
रोना-धोना छोड़ो कहो नहीं, सम्मानित हूँ मैं।
दिखा दो ताकत से अपनी कि अभिमान हूँ मैं।
अब रक्त से भी अबला नही सबला हूँ मैं।
कलियुग में भी महिषासुर पर चण्डी हूँ मैं।
नारी हूँ मैं।।

नारी सशक्तिकरण के मायने

मेघा मिश्रा

डी0एल0एड0 प्रथम सेमेस्टर

आज हम नारी (महिला) के सशक्तिकरण पर अत्यधिक जागरूक हो चुके हैं नारी सशक्तिकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा है चाहे खेलकूद हो अथवा अन्तरिक्ष विज्ञान हमारे देश की महिलाएँ किसी से पीछे नही है वे आगे बढ़ रही है और अपनी उपलब्धियों से देश का गौरव बढ़ा रही है।

नारी सशक्तिकरण का मुद्दा Women Development का नही रह गया बल्कि Women Led Development का है। यह जरूरी है कि हम स्वयं को और अपनी शक्तियों को समझे जब कई कार्य एक समय पर करने की बात आती है तो महिलाओं को कोई नही पछाड़ सकता यह उनकी शक्ति है और हमें इस पर गर्व होना चाहिए। ''आइए हम लड़कियों के जन्म होने पर खुशियाँ मनाए हमें अपनी बेटियों पर समान रूप से गर्व होना चाहिए मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि बेटी की पैदा होने पर पाँच पौधे लगाकर खुशियाँ मनाए।''

कोई भी देश यश के शिखर पर तब तक नही पहुँच सकता जब तक उसकी महिलाएँ कन्धे से कन्धा मिलाकर न चले

महिलाओं को खुद से जुड़े फैसले लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए सही मायने में तभी हम नारी सशक्तिकरण को सार्थक कर सकते हैं महात्मा गाँधी ने कहा था जब नारी शिक्षित होती है तो दो परिवार शिक्षित होते हैं। मैं इसमें यह जोड़ूँगा कि जब हम नारी को शिक्षित करते हैं तो न केवल दो परिवारों को बल्कि दो पीढ़ियों को शिक्षित करते हैं महिला दो शक्ति है, सशक्त है वो भारत की नारी है न ज्यादा में न कम में दो सब में बराबर की अधिकारी है स्त्री की उन्नति पर ही, राष्ट्र की उन्नति निर्भर है।

मानवता की प्रगति महिलाओं के सशक्तिकरण के बिना अधूरी है आज मुद्दा महिलाओं के विकास का नही बल्कि महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास का है।

भेदभाव जुल्म मिटायेगे दुनिया नई बनायेगे। नई है डगर नई है सफर, अब हम नारी को आगे ही बढ़ाते जायेगे। महिलाओं को दे इतना सम्मान, कि बढ़े हमारे देश की शान

भारतीय नारी पर निबन्ध

अंजली सिंह
बी0एड0 प्रथम वर्ष

1. प्रस्तावना :- प्राचीन युग से ही हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रही है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूज्यनीय एवं देवी के समान माना गया है। हमारी धारणा रही है कि देव शक्तियां वही निवास करती हैं जहाँ समस्त नारी जाति को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। ''कोई भी परिवार अथवा समाज व राष्ट्र तब तक सही मायने में प्रगति की ओर अग्रसर नही हो सकता जब तक वह नारी के प्रति हीनभाव का त्याग नही करता है।

2. प्राचीन काल में नारी स्थित :- प्राचीनकाल में भारतीय नारी को विशिष्ट सम्मान व पूज्यनीय दृष्टि से देखा जाता था। प्राचीनकाल में एक विशेष स्थान दिया गया था। भारतीय नारी की दशा में परिवर्तन आने लगे। अंग्रेजी शासन काल में भारतीय नारी की दशा बहुत ही चिंतनीय हो गयी नारी को रोज-रोज तिरस्कार का सामना करना पड़ता था।

3. नारी की शक्ति :- अंग्रेजी शासनकाल में भी रानी लक्ष्मीबाई चाँद बीबी आदि नारियाँ भी भारत में विद्मान थी जिन्होंने अपनी परम्पराओं आदि से ऊपर उठकर इतिहास के पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी स्वतंत्रता संग्राम में भी भारतीय नारियों ने बहुत योगदान दिया है जिनको कभी अनदेखा नही किया जा सकता है।

4. नारी का रूप :- नारी के बहुत सारे रूप है। नारी हर रूप में आ सकती है। चाहे दुर्गा के रूप में या काली के रूप में चाहे माँ के रूप में हो चाहे बहन के रूप में नारी के सब रूप महान है।

5. नारी का वर्तमान रूप :- नारी शक्ति के बिना मनुष्य कुछ भी नही कर सकता है। ऐसी मान्यता है जिस घर में नारी का आदर सम्मान नही होता है वहाँ पर लक्ष्मी का निवास नही होता है भारत में समय-समय नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

6. उपसंहार :- स्पष्ट है कि भारत में नारियों आज भी अपना सही स्थान नही पायी है जो उन्हें मिलना चाहिए जैसे दहेज की वजह से ना जाने कितनी बहू-बेटियों को अपने जान से हाथ धो बैठती है। जबकि भारतीय नारी मनुष्य से कम नही है हर क्षेत्र में वो कन्धे से कन्ध मनुष्य से मिलाकर देश और समाज की प्रगति में अपना हिस्सा डाल रही है।

नारी शिक्षा

रोहित कुमार
बी0एड0 प्रथम वर्ष

भारत में वैदिक काल से ही स्त्रियों के लिये शिक्षा का व्यापक प्रचार था। मुगलकाल से ही अनेक महिला विदुषियों का उल्लेख मिलता है।

पुनर्जागरण के दौर में भारत में स्त्री शिक्षा को नए सिरे से महत्व मिला ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वार सन् 1854 में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी प्रयासों के कारण साक्षरता के दर में 0.2% से बढ़कर 6 % तक पहुँचा। कोलकत्ता विश्वविद्यालय महिलाओं की शिक्षा को स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था। 1986 में शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति प्रत्येक राज्य को सामाजिक रूपरेखा के साथ शिक्षा का पुर्नगठन करने का निर्णय लिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सन् 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ाने का मौका देने के लिये अधिक लड़कियों को दाखिला करने और उनकी उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योगजाएं बनायी है।

इस दौर का आरंभ हो चुका था पर कुछ गांवों में समय होने के कारण महिलाओं की शिक्षा को लेकर काफी पीछे चल रहा था, वहाँ पर महिलाओं में नारी के प्रति घृणा को जन्म दिया गया और महिलाएँ अपनी बच्चियों को जन्म देकर खत्म कर देती और यह क्रम चलता रहा, परन्तु कुछ समय पश्चात शिक्षा का विस्तार हुआ और महिलाओं ने मार्मिक कृत (पुत्री को मारना) बन्द कर दिया, परन्तु अब उन्हें केवल गृहणी व दूसरे घर में जाने वाली व उपेक्षा की भावना से देखा जाता रहा परन्तु उन्हें नही मालूम था या समाज मालूम होते हुए भी अनदेखा करता था कि 'नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति मातृ समोगुरुः'।

इस दुनिया में विद्या के समान क्षेत्र नही है और माता के समान गुरू नही हैं। बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक उसकी माता का प्रभाव पड़ता है अतः एक स्त्री के शिक्षित होने पर सम्पूर्ण परिवार शिक्षा रूपी अमृत में डूबा जाता है। समय गुजरा और एक समय ऐसा आया जब लड़कियों को शिक्षा, स्वास्थ्य सम्बन्धित समान अधिकार दिये जाने लगे और इसी कारण लड़कियां अध्यापक, पुलिस, बैंक, आर्मी, इंजीनियर आदि पदों की शोभा बढ़ रही है। शिक्षा के कारण ही महिला समाज सशक्त हुआ और एक नया इतिहास रचा।

'महिला सशक्तिकरण'

पूजा तिवारी
बी0एड0 प्रथम सेमेस्टर

महिला सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले हमें ये समझ लेना चाहिए कि हम 'सशक्तीकरण' से क्या समझते हैं। 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें ये योग्यता आ जाती है जिसमें वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके महिला सशक्किरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहाँ महिलाएं परिवार एवं समाज के सभी बन्धनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हो।
अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फेसले लेने के लिये महिलाओं को अधिकार देना ही ''महिला सशक्तिकरण'' है। परिवार और समाज की हदों को पीछे छोड़ने के द्वारा फेसले, अधिकार, विचार, दिमाग आदि सभी पहलुओं से महिलाओं को अधिकार देना उन्हें स्वतंत्र बनाने के लिये है। देश, समाज और परिवार के उज्जवल भविष्य के लिये महिला सशक्तिकरण बेहद जरूरी है।

प्राचीन समय से ही भारत में महिलाएं अग्रणी भूमिका में थी हालाकि उन्हें हर क्षेत्र में हस्तक्षेप की इजाजत नही थी। अपने विकास और वृद्धि के लिये उन्हें हर पल मजबूत जागरूक और चौकन्ना रहने की जरूरत है। विकास का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समर्थ बनाना है क्योंकि एक सशक्त महिला अपने बच्चों के भविष्य को बनाने के साथ ही देश का भविष्य भी सुनिश्चित करती है।

विकास की मुख्य धारा में महिलाओं को लाने के लिये भारतीय सरकार के द्वारा कई योजनाओं को निरूपति किया गया है। पूरे देश की जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी आधे की है और महिलाओं एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये हर क्षेत्र में इन्हें स्वतंत्रता की जरूरत है।

सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिलाओं सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरूरत है।

महिला सशक्तिकरण

अजय कुमार
बी0एड0 द्वितीय वर्ष

वर्तमान समय में देश में नारियों का एक ऐसा वर्ग है, जो शिक्षित, सजग और जागरूक है उसे अपने पैरो पर खड़ा होने के लिये पुरुष रूपी वैसाखी की आवश्यकता नहीं है, उसे अपने अधिकार और सामर्थ्य का पूर्ण ज्ञान है समाज में महिलाओं की स्थिति एवं उनके अधिकारों में वृद्धि ही महिला सशक्तिकरण है। महिला जिसे कमी मात्र भोग एवं सन्तान उत्पत्ति का जरिया समझा जाता था, आज पुरूषों के हर क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़ी है। जमीन से आसमान तक कोई क्षेत्र अछूता नही है। जहाँ महिलाओं ने अपनी जीत का परचम न लहराया हो।

आज की नारी छटपटाहट है आगे बढ़ने, जीवन एवं समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कर गुजरने की, अपने अविराम अथक परिश्रम से पूरी दुनिया में एक नया सवेरा लाने की और एक ऐसी सशक्त इबादत लिखने की, जिसमें महिला को अबला के रूप में न देखा जाये। वास्तव में भारत ही नही बल्कि पूरे विश्व मुख्यतः व्याप्त पुरूष प्रधान समाज में एक ऐसी सामाजिक संरचना निर्मित की, जिसमें प्रत्येक निर्णय लेने सम्बन्धी अधिकार पुरुषों के पास ही सीमित रहे। आदिम समाज से लेकर आधुनिक समाज तक आधी दुनिया के प्रति ऐसा भेदभावपूर्णं नजरिया रखा गया जिसने कभी भी स्त्रियों को एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार नही किया।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में अन्य प्रयास महिला दिवस के आयोजन को माना जाता है। जिसकी शुरूआत अमेरिका में सोशलिस्ट पार्टी के आहवान पर पहली बार 28 जनवरी 1909 को की गई जिसको फरवरी महीने के अन्तिम रविवार को आयोजित किया जाने लगा।

आज की स्त्री ने केवल पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना चाहती है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुत आगे तक जाना चाहती है जहाँ उन्मुक्तता, सृजन, सबलता का अहसास हो, जहाँ उसकी प्रतिभा की पहचान हो जहाँ उसके व्यक्तित्व का निर्माण हो।

आज की स्त्री उन्मुक्त उड़ान भरने के व्याकुल है, नई सीमा को परिभाषित करने के लिये सचेत है और अपनी क्षमताओं का पूर्ण प्रदर्शन करने के लिये कृत संकल्प। उसके मार्ग आने वाली बाधाएं अब उसकी दृढ़शक्ति के आगे टिक नही पाती। उसने स्वयं को उस मुकाम पर स्थापित किया है। जहाँ पुरूष मानसिकता या समाज उसके अस्तित्व को नकार नही सकता उसके व्यक्तित्व के प्रभाव से नही बच सकता। आज आवश्यकता भारत की एक एक नारी को सुभाष चन्द्र बोस की इस पंक्ति से प्रेरणा लेने की-ऐसा कोई भी कार्य नही, जो हमारी महिलाएं नही कर सकती।